सम्पूर्ण दर्शनीय मूर्त बनने के लिए इशारे

1 जब चित्र तैयार हो जाता है तब दर्शन करने वालों के लिए खोला जाता है। ऐसे चैतन्य चित्र तैयार हो जो समय का पर्दा खुले? दर्शन सदैव सम्पूर्ण मूर्ति का किया जाता है, खंडित मूर्ति का दर्शन नहीं होता। किसी भी प्रकार की कमी अर्थात् खंडित मूर्ति।

2 दर्शन कराने योग्य बने हो? स्वयं का सोचते हो या समय का सोचते हो?

स्वयं के पीछे समय का परछाई है। स्वयं को भी भूल जाते हो इसलिए मास्टर त्रिकालदर्शी बन अपने तीनों कालों को जानते हुए स्वयं को सम्पन्न-मूर्त्त अर्थात् दर्शन मूर्ति बनाओ।

अव्यक्त पालना का रिटर्न

12.01.77

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

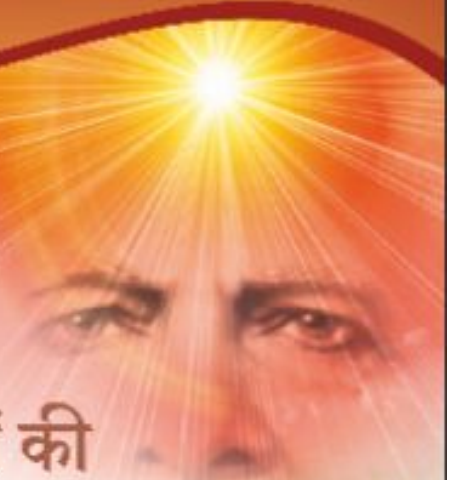

प्रश्न: मीठे बाबा, भक्ति के संस्कारों की परख किन बातों के आधार से कर सकते हैं?

उत्तर: मीठे बच्चे,

1. भक्ति के संस्कार अधीनता अर्थात् किसी के अधीन रहना, मांगना, पुकारना, स्वयं को सदा सम्पन्नता से दूर समझना, इस प्रकार के संस्कार अभी तक अंश मात्र में रहे हुए हैं, या वंश रूप में भी हैं? वर्तमान समय बाप समान गुण, कर्त्तव्य और सेवा में कहाँ तक सम्पन्न बने हैं?

2. वर्तमान के आधार से भविष्य प्रालब्ध कितनी श्रेष्ठ बना रहे हैं? ऐसे हरेक के तीनों कालों को देखते हुए, 'बालक सो मालिक' बनने वालों को देखते हुए गुण भी गाते हैं, लेकिन साथ-साथ कहीं-कहीं आश्चर्य भी लगता है।

3. अपने-आप से पूछो और अपने-आपको देखो कि अभी तक भक्तपन के संस्कार अंश रूप में भी रह तो नहीं गए हैं? अगर अंश मात्र भी किसी स्वभाव, संस्कार के अधीन हैं, नाम, मान, शान के मंगता (मांगने वाले) हैं; 'क्या' और 'कैसे' के क्वेश्चन (Question) में चिल्लाने वाले, पुकारने वाले, भक्त समान 'अन्दर एक बाहर दूसरा', ऐसे धोखा देने के बगुले भक्त के संस्कार हैं, तो जहाँ भक्ति का अंश है वहाँ ज्ञानी तू आत्मा हो नहीं सकती, क्योंकि 'भक्ति है रात और ज्ञान है दिन'। रात और दिन इकट्ठे नहीं हो सकते।

12.01.77

मन की बात... बापदादा के साथ

मैं आत्मा :-

प्यारे बाबा, सेवा की सफलता का मुख्य साधन क्या है?

बापदादा :- मीठे बच्चे,

✷ सेवा में सफलता का मुख्य साधन है - त्याग और तपस्या। दोनों में से अगर एक की भी कमी है तो सेवा की सफलता में भी इतने परसेन्ट कमी होती है। त्याग अर्थात् मन्सा संकल्प से भी त्याग, सरकमस्टेंस (Circumstance;परिस्थिति) के कारण या मर्यादा के कारण मजबूरी से त्याग बाहर से कर भी लेंगे तो संकल्प से त्याग नहीं होगा।

✷ त्याग अर्थात् ज्ञान-स्वरूप के संकल्प से भी त्याग, मजबूरी से नहीं। ऐसे त्यागी और तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लगन में लवलीन, प्रेम के सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए को ही कहेंगे - 'तपस्वी'। ऐसे त्याग तपस्या वाले ही सेवाधारी कहे जाते हैं। ऐसे सेवाधारी हो ना? त्याग ही भाग्य है।

✷ बिना त्याग के भाग्य नहीं बन सकता। इसको कहा जाता है टीचर। तो नाम और काम दोनों टीचर के हैं। केवल नाम टीचर का नहीं। टीचर अर्थात् पोजीशन नहीं, लेकिन सेवाधारी। टीचर्स अर्थात् सभी को पोजिशन दिलाने वाली, न कि पोजीशन समझ उसमें अपने को नामधारी टीचर समझने वाली। जैसे कहा जाता है देना, देना नहीं लेकिन लेना है - ऐसे ही टीचर अपने पोजिशन का त्याग करती है तो यही भाग्य लेना है।

12.01.77

12-1-77 अव्यक्त वाणी का मुख्यबिंदु

जब चित्र तैयार हो जाता है
तब दर्शन करने वालो के लिए
पर्दा खोला जाता है

दर्शन सदैव सम्पूर्ण मुर्ति का
किया जाता है, खंडीत मुर्ति
का दर्शन नही होता

किसी भी प्रकार की कमी
अर्थात् खंडीत मुर्ति

12-01-77 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं ज्ञानी तू आत्मा हूँ।

ज्ञानी तू आत्मा अर्थात् ज्ञान के गहने, गुणों के गहनों से सजे-सजाए। सदा भक्ति के फल-स्वरूप, ज्ञान सागर और ज्ञान में समाया हुए, इच्छा मात्रम् अविद्या, सर्व प्राप्ति स्वरूप।

12-01-77

'बालक सो मालिक' बनने वालों के तीनों कालों का साक्षात्कार

ज्ञानी तू आत्मा, सदा भक्ति के फल-स्वरूप, ज्ञान सागर और ज्ञान में समाया हुआ रहता है, इच्छा मात्रम अविद्या, सर्व प्राप्ति स्वरूप होता है।

दर्शन करने योग्य बने हो? स्वयं का सोचते हो या समय का सोचते हो? स्वयं के पीछे समय का परछाई है। स्वयं को भी भूल जाते हो; इसलिए मास्टर त्रिकालदर्शी बन अपने तीनों कालों को जानते हुए स्वयं को सम्पन्न-मूर्त अर्थात दर्शन मूर्ति बनाओ।

- सर्व प्राप्ति स्वरूप
- इच्छा मात्रम् अविद्या
- तिलकधारी
- सर्व अधिकारी
- मायाजीत